1935C Towards Peace and Pleasure

सुख-शान्ति का उपाय

प्राणिमात्र सुख-शान्ति चाहता है और मानव-समाज उसकी प्राप्ति के लिए अनादि काल से संघर्ष करता हुआ आ रहा है। जिन महापुरुषों को यह सुख-शान्ति प्राप्त हुई, उन्होंने यही उपदेश दिया है कि जनसाधारण को सुख-शान्ति का उपाय बताया है कि तुम्हें प्राकृतिक, सुख-शान्ति तुम्हें बाहर से नहीं मिलेगी। बाहरी वस्तुओं को एकत्रित कर-करके यदि तुम सुख-शान्ति प्राप्त करना चाहते हो - तो यह तुम्हारा भ्रम है। ये बाहरी वस्तुएं तो ज्यों-ज्यों प्राप्त होंगी - त्यों-त्यों तुम्हारी तृष्णा और-और भी अधिक बढ़ेगी, जैसे इन्धन के योग से अग्नि उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाती है। यही हाल सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति का है। अतः सुख-शान्ति पाने के लिए अपनी इच्छाओं को सीमित करो और आवश्यकताओं को कम करो।

जैन सन्तों ने परिग्रह को पाप कहा है और पाप दुःख का कारण है अशान्ति का जनक है। किसी लोग परिग्रह-संचय करके उससे सुख-शान्ति पाने की इच्छा करते हैं, यह अत्यन्त आश्चर्य और खेद की बात है।

कुछ ही धर्म मानकर लोग सुख-शान्ति पाने के लिए नाना प्रकार के पुण्य कार्य करते हैं और जीवन भर पुण्य कार्यों को करते हुए भी जब उन्हें सुख-शान्ति प्राप्त नहीं होती, प्रत्युत दुःख और अशान्ति बढ़ती जाती है, तब वे अश्रद्धालु बनकर कहने लगते हैं कि हमने जीवन भर धर्म कार्य करते हो गया - पर कभी भी सुख-शान्ति नहीं नसीब हुई। ऐसे कहने वालों ने कभी यह सोचा ही नहीं है कि पुण्य और धर्म ये दोनों एक ही वस्तु हैं, या दो भिन्न-भिन्न वस्तु हैं।

हमारे महर्षियों ने 'धर्मः सर्व सुखाकरः' कहकर धर्म को सर्व सुखों का दाता एवं भण्डार कहा है। और सच्चाई यह है कि धर्म सेवन तत्काल ही सुख देता है, उसे सेवन करने के पश्चात् उसके फल की प्रतीक्षा के लिए दिनों, महीनों या वर्षों की आवश्यकता नहीं है। जैसे मिश्री के मुख में डालते ही तत्काल मिठास प्रकट होता है, उसके लिए समय की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है।

यदि किसी बच्चे को खाने के लिए मिश्री की डली दी जाय और वह मुँह में डालने के बाद कहे - कि मुझे तो उसका मिठास नहीं आ रहा है, अथवा यह कहे कि यह तो खारी, कसैली या बेस्वाद मालूम पड़ रही है तो दूसरा आपको सन्देह होगा - कि दुकानदार ने कहीं मिश्री के धोखे में बेंधा नमक की डली, फिटकरी या सफेद पत्थर का टुकड़ा तो नहीं दे दिया है जो बच्चा उसे खारी, कसैली या बेस्वाद बता रहा है। जब आप उसके मुँह में से उसे निकाल कर स्वयं परीक्षा करेंगे और बच्चे के कहने के माफिक ही उसका स्वाद पायेंगे - तो दुकानदार को उलाहना देंगे कि आपने मिश्री के नाम पर यह क्या दे दिया है। यदि आप उसे यथार्थ स्वयं मिठास का अनुभव करते हैं और बच्चा उससे विपरीत कहता है तो आपको फिर यह सन्देह होगा कि क्या बच्चे के मुँह में कोई गन्दी चीज तो नहीं भरी हुई है, या उसकी जीभ को लकवा तो नहीं मार गया है कि उसे उसका स्वाद ही नहीं आता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे बच्चे को मिश्री डली का स्वाद नहीं आने पर दो ही उत्तर हैं — १ या तो उसे मिश्री नहीं दी गई, बल्कि उसके स्थान पर नमक, फिटकरी या पत्थर आदि की अन्य वस्तु दे दी गई है जिससे कि उसे उसका मिठास नहीं मिल रहा है, या अथवा उसके मुँह में कोई गन्दी वस्तु है या लकवा मार गया है कि ठीक यही दो उत्तर धर्म के विषय में समझना चाहिए।

संसार के कुछ आदमी प्राणियों को तो धर्म नामकी मिश्री मिली ही नहीं है। जिन थोड़े से भाग्यशालियों को यह मिश्री भी है, तो उसके धारण करने वालों का हृदय स्वच्छ नहीं है। कारण धर्म मुँह में नहीं - किन्तु हृदय में धारण किया जाता है। इस प्रकार यदि आप हृदय का दर्शन करें - तो देखते हैं कि जिस हृदय में हमने धर्म धारण करने का प्रयास किया है, उसे स्वच्छ किये बिना ही किया है, यही कारण है कि वहाँ धर्म रूप मिश्री का स्वाद नहीं आता। हम देखते हैं कि हमारा हृदय अनादि काल से लेकर आज तक अनन्तानुबन्धी कषायों के महा विषों से व्याप्त है, उसमें कषायों के महा विषों की परतें - की परतें जमी हुई हैं, जब तक उस हृदय को स्वच्छ नहीं किया जायगा - तब तक धर्म रूप मिश्री का स्वाद आ ही नहीं सकता है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि धर्म धारण करने के पूर्व हमें अपने हृदय की सफाई करनी चाहिए और उसे धोकर निर्मल बनाना चाहिए - तब देखेंगे कि और अनुभव करेंगे - कि धर्म धारण करते ही तत्काल उसके मिठास से - अपूर्व शान्ति प्राप्त होती है।

अधिकतर लोगों ने आज और तुरन्त एक समय बनाते और तुरन्त कार्य करते तुरन्त फल की आकांक्षा करते हैं। पर उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि ~~[illegible]~~ कर्म और सुख के आकाश-पाताल जैसा अन्तर है। सुख एक बीज है, कर्म का फल है। जैसे बीज बोते ही उसका फल तुरन्त नहीं मिल जाता, प्रतीक्षा करनी पड़ती है, बीज बोने के बाद भी पानी से सिंचाई करनी पड़ती है, खाद देना पड़ता है और समय-समय पर आवश्यक गोड़ाई करनी पड़ती है। ठीक इसी प्रकार सुख रूप बीज बोने के बाद भी फल के लिए उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी और समय-समय पर आवश्यक गोड़ाई भी करनी पड़ेगी। जैसे कोई बीज दो-चार माह में फल देता है, तो गन्ने आदि के बीज एक वर्ष में फल देते हैं तथा आम आदि के बीज कई वर्षों के बाद फल देते हैं। इसी प्रकार सुख रूप बीजों की अनेक प्रकार के हैं और उनके फलों की प्राप्ति भी तत्काल नहीं होती है। कोई तो कुछ समय के बाद ही होती है ऐसा जानना चाहिए।

किन्तु कर्म तो मिश्री की डली है, तत्काल ही उसका स्वाद प्राप्त होता है। ठीक इसी प्रकार यदि हृदय स्वच्छ है, निर्मल है, तो जितनी भी देर आप ध्यान करेंगे - उतनी देर बराबर आपको सुख और शान्ति प्राप्त होगी। निर्मल मिलता रहेगा - अर्थात् सुख और शान्ति प्राप्त होगी। यद्यपि कर्म की अनेक परिभाषाएँ शास्त्रों में दृष्टिगोचर होती हैं, पर यदि गंभीरता से या सूक्ष्म दृष्टि से आप विचार करेंगे - तो उन सबका अर्थ एक ही मिलेगा।

'स्वयं दहत्यग्निवत्' कहा गया है और अभी-अभी हम लोगों ने इस दशा में क्रोध का स्वरूप सुना है। अब आप देखें - कि क्रोध का प्रथम अंश क्या है। यदि आपका हृदय स्वच्छ है और आप क्षमा धारण करते हैं, तो विरोधी व्यक्ति - या शत्रु के द्वारा हजारों गालियाँ देने पर भी आप सुख शान्ति का अनुभव करते हुए मुस्कराते रहेंगे - उसकी गालियों का कोई प्रभाव नहीं होगा। क्षमा के बिना यह नहीं पड़ेगा। क्षमा - क्षमा कर्म को अंगीकार करते ही तत्काल सुख-शान्ति आपको मिली - या नहीं?

इस के विपरीत यदि आप ~~क्रोध करते हैं~~ का हृदय स्वच्छ नहीं है उसमें कलुषता विद्यमान है और अन्तःकरण अपवित्र है और आप क्रोध करते हैं, या क्रोध करने पर भी आपके हृदय में जागृत होता है, तो आप अशान्ति का तत्काल अनुभव करने लगते हैं। इस सर्व कथन का निष्कर्ष यही है कि क्रोध करना महान अकर्म है, जिसके होते ही जीव तत्काल अशान्ति और दुःख का अनुभव करता है और स्वयं कर्म है। जिसके कारण करते ही तत्काल शान्ति और सुख प्राप्त होता है। यही बात मान आदि शेष कषायों और अकर्म के शेष कर्मों के विषय में भी जाननी चाहिए।